Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

मृदुला गर्ग कृत 'कठगुलाब'उपन्यास में निहित नारी चेतना

आराधना वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर –हिंदी, राजकीय महाविद्यालय बबराला–गुन्नौर (संभल)

Article Info
Volume 6, Issue 5
Page Number : 23-25
Publication Issue :
September-October-2023
Article History
Accepted : 01 Sep 2023
Published : 12 Sep 2023

शोधसारांश- मृदुला गर्ग कृत कठगुलाब उपन्यास में निहित नारी–मुक्ति की चेतना का स्वरूप देखने को मिलता है। पुरूष के द्वारा नारी का शोषण तथा नारी द्वारा उस शोषण का मुकाबला कर अपने आत्मसम्मान तथा स्वयं को सिद्ध करने के लिए किये गये नारी के प्रयासों को मृदुला गर्ग द्वारा उपन्यास में रेखांकित किया गया है। नारी पात्रों के माध्यम से समकालीन नारियों को अपनी ऊर्जा का बोध कराना उनका मूल उद्देश्य रहा है।

मुख्य शब्द- मृदुला गर्ग, कठगुलाब, उपन्यास, नारी–मुक्ति, चेतना, समकालीन।

स्त्री का संघर्ष मानव सभ्यता की विकास यात्रा के समान्तर ही निरन्तरता में आरम्भ से ही समाज में विद्यमान रहा है। देश–काल के साथ इस संघर्ष का केवल स्वरूप ही बदलता रहा है। मूलस्वर में सामन्तीयुग से लेकर आज के आधुनिक युग तक स्त्री का संघर्ष एक जैसा ही रहा है। हमारे समाज में स्त्री को रीति–रिवाजों में बान्धकर विभिन्न प्रकारों द्वारा शोषण किया जाता रहा है। इसी संघर्ष को सिमोन द बाउर ने अपनी पुस्तक 'द सेकेण्ड सेक्स'में बताया था कि "स्त्री पैदा नहीं होती" उसे बना दिया जाता है।"[1] यह कथन देश–विदेश की सभी स्त्रियों के संघर्ष को पूर्णतया बयां करता है। भारतीय साहित्य में नारी के उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य ही बताये गए है । स्त्री में आदर्श नारी हेतु कौन– कौन से गुण आवश्यक हैं इस पर अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु नारी की दैहिक, मानसिक, भावात्मक समस्यायों को यथोचित महत्व नहीं मिला, उसे मात्र एक वस्तु के समान समझा गया। नारी के जीवन को आत्मानुभूतिपूरक समझने का प्रयास नहीं किया गया।

लेखिका रेखा कास्तकार स्त्री–विमर्श के सरोकर पर बात करते हुए कहती है कि "स्त्री विमर्श का सरोकार जीवन और साहित्य में स्त्री– मुक्ति के प्रयासों से है। स्त्री की स्थिति की पड़ताल उसके संघर्ष एवं उसकी पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ–साथ बदलते सामाजिक सन्दर्भों में उसकी भूमिका तलाशे गये रास्तों के कारण जन्में नये प्रश्नों के टकराने के साथ–साथ आज भी स्त्री की मुक्ति का मूल उसके मनुष्य के रूप में स्वीकारेजाने का प्रश्न है।"[2]

समकालीन साहित्य की प्रत्येक विधा स्त्री जीवन के सभी संघर्षो को स्वर प्रदान करती है। नारी का संघर्ष पुरूषों से बराबरी करने या उनसे आगे निकल जाने का नहीं बल्कि उसका संघर्ष समाज में परिवार में स्वयं को स्थापित करने तथा अपनी अस्मिता की तलाश के लिये है। अस्मिता एक ऐसा शब्द है जो व्यक्ति को पहचान के एक अलग धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है। डॉ0 सुरेश चन्द्र गुप्ता लिखते है– "अस्मिता को परिभाषित करना कठिन है फिर भी मैं हूँ से लेकर मैं किस लिये हूँ तक की अन्तर्यात्रा कई पडावों से होकर अन्तत: अस्मिता के गन्तव्य पर पहुँचकर ही पूरी होती है। "[3]

स्त्री–विमर्श उत्तर–आधुनिक की धुरी पर खड़ा एक सशक्त साहित्यिक विमर्श है। स्त्री–विमर्श केवल स्त्री की मुक्ति या पुरूष की बराबरी का आख्यान नहीं है। बल्कि अत्यन्त गहन अर्थवाला यह शब्द है नारी मुक्ति के साथ–साथ नारी की अस्मिता, चेतना व

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

स्वाभिमान को भी अपने में समेट लेता है। इसे ध्यान में रखकर ही समकालीन महिला कथाकारों ने जीवन के बहुविध पक्षों को लेकर लेखन कार्य किया है। तथापि इसमें सन्देह नहीं है। कि इसके केन्द्र में नारी ही है।

कालक्रम के अनुसार देखा जाये तो पहले लेखिकाओं की रचनाधर्मता प्रमुखत: उपदेश प्रधान रहा करती थी। लेखिकाओं का ध्यान नारी की दुर्दशा की ओर जा तो रहा था लेकिन वह उस दिशा में कुछ क्रान्तिकारी कदम नहीं उठा पा रही थी वह उसमें परम्परागत दृष्टिकोण ही अपना रही थी। लेकिन आगे चलकर लेखिकाओं ने अपने भावनात्मक पक्षों को साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

कृष्णासोवती ,चित्रा मुग्दल, मंजुल भगत, उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया आदि लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न विद्रूपताओं राजनैतिक-आर्थिक मुद्दों तथा स्त्री- अस्मिता पारिवारिक घुटन आदि को अपने कथा साहित्य का प्रमुख विषय बनाया है। तमाम दूसरे विषयों के बावूजद इनके साहित्य में स्त्री-मुक्ति का प्रश्न ही केन्द्र में रहा हैं। मृदुला गर्ग भी उन महिला रचनाकरों में से एक है, जिन्होंनें अपने साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रश्न को साहस के साथ उजागर किया हालांकि उनमें कथा साहित्य का आधार स्त्री-स्वातंत्र्य पर स्थिर जरूर है तथापि वे स्त्री-मुक्ति को अन्य समकालीन लेखिकाओं की तरह नहीं देखती हैं। उनका ट्रीटमेंट अपने समकालीनों से अलग दिखाई देता है। उनके लिये समाज में पुरूषों की बराबरी कर लेना या पुरूषों से आगे बढ़ जाना तथा सामाजिक एवं संवैधानिक अधिकार प्राप्त कर शारीरिक रूप से स्वतन्त्र हो जाना मात्र ही स्त्री-स्वतन्त्रता नहीं है। मृदुला गर्ग जी के लिये स्त्री मुक्ति का अर्थ तन और मन दोनों की मुक्ति में निहित हैं। वे फेमिनिज्म का अर्थ दरअसल सोच की जकड़बंदी मुक्ति के रूप में लेती हैं। मृदुला जी नारी को परम्परागत सोच से मुक्ति दिलाकर उसे आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। स्त्री-मुक्ति का उपाय बताते हुये मार्क्स एंजेल्स ने भी कहा था- "स्त्रियों की मुक्ति की पहली शर्त यह है कि पूरी नारी जाति फिर से सार्वजनिक उद्योग में प्रवेश करें और आवश्यकता है कि समाज की आर्थिक इकाई होने का वैयक्तिक पारिवारिक गुण नष्ट कर दिया जाएं।"[4]

समकानील बहुचर्चित महिला लेखिकाओं में मृदुला गर्ग अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुकी है। मृदुला गर्ग अपनी लेखनी साहित्य के सृजन में निरन्तर चलाती आ रही है। उन्होंने उपन्यासों और कहानियों के अतिरिक्त निबन्ध, नाटक, संस्मरण भी लिखें है। मुख्य रूप से उपन्यास लेखन को इन्होंने अधिक महत्व दिया है। ये स्वयं कहती है- "उपन्यास को मैंने प्राथमिकता दी क्योंकि मैं जो कहना चाहती थी वह कहानी में सीमित नहीं कर पाती थी। कहानियों में मैंने क्षण को पकड़ा है और उपन्यास में जीवन की विस्तीर्णता को। थीम लेने के पश्चात् मुझे लगता है कि मैं उसको कहानी में पूरा नहीं कर पा रही हूँ इसलिये उपन्यास को ही प्राथमिकता देती हूँ।[5] मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में स्त्रियों के शोषण दमन बलात्कार का हृदय विदारक चित्रण किया है। साथ ही वे इन शोषित स्त्रियों के आत्मनिर्भर और स्वालंबी रूप को भी चित्रित करती है। मृदुला गर्ग का "कठगुलाब "उपन्यास आधुनिकता के नए प्रतिमानों के साथ उभर कर सामने आता है और स्त्री पुरुष के आधुनिक संबंधों की चर्चा करने वाला यह उपन्यास नई चेतना को नए स्वर और तेवर के साथ प्रस्तुत करता है।

मृदुला गर्ग ने कठगुलाब उपन्यास में स्त्री के स्वतन्त्र अस्तित्व को अभिव्यक्त किया है।'कठगुलाब'उपन्यास में निहित नारी चेतना के साथ दृष्टिगत होती है। काव्यायनी मृदुला गर्ग के सम्बन्ध में लिखती है- "मृदुला गर्ग जी यह साफ कर देती हैं कि वे स्त्री की उपेक्षा या उसकी अस्मिता के प्रश्न जैसे किसी भी सवाल को स्वतन्त्र स्वायत्त रूप में ही नहीं देखती बल्कि पूरे समाज की अन्य विसंगतियों के साथ देखती है ।"[6]

नारी चेतना के द्वारा ही कठगुलाब उपन्यास की नारी पात्रों में भी मुक्ति कीआकांक्षा है। कठगुलाब के नारी पात्र स्मिता, मारियान, नर्मदा असीमा पुरुष पात्रों से शोषित हैं परन्तु वे कभी भी अपने आपको कमजोर नहीं होने देती है वे उन परिस्थितियोंसे डटकर सामना करती है और अपने आपको आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाती हैं। मृदुला गर्ग ने स्त्री जाति पर होने वाले अत्याचारों की न केवल गाथा प्रस्तुत की है बल्कि यह भी दिखाया है कि पूरब और पश्चिम में पुरूष मानसिकता लगभग समान है। बस में सफर करते या भीड़-भाड़ वाले इलाके से पैदल चलते वक्त भेड़िए पुरुष की लार टपकाती नजरों से किसी भी वर्ग की स्त्री नहीं बचीं।

कठगुलाब उपन्यास की नारी पात्र स्मिता आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी होना चाहती है। अपने जीजा द्वारा शोषित किये जाने पर भी वह अपने आप को मजबूत बनाकरअपने ऊपर हुये अत्याचार का प्रतिशोध लेना चाहती है। वह कानून का दरवाजा नही खटखटाती है।

बल्कि स्वयं शक्तिरूपा बनने के लिये अपने अन्दर ऊर्जा को समेटती है वह स्वयं कहती है- "पस्त होकर भी मंसूबा बदलती नही थी. अगले दिन फिर वही दृश्य जीती थी और निश्चय करती थी कि एक दिन.. .. वक्त आने पर..... ताकतवर हो लेने पर..... बहुत जल्दी..... मैं ठीक ऐसे ही उसे नर पिशाच को उसके किए की सजा दूंगी।"[7]

स्मिता आत्मकेन्द्रित नारी पात्र है। लेकिन अपने ऊपर हुये अत्याचार का प्रतिशोध लेने वह उचित शिक्षा प्राप्त करने के लिये अमेरिका जाने को तैयार है। अमेरिका में वह रॉ संस्था में काम करती है जहाँ पर वह पीडित एवं दुखी नारियों की कहानी सुनकर अपने ऊपर हुये अत्याचार को भूल जाती है और वह कहती है- "मैंने पाया कि मैं पहले से कहीं ज्यादा हँसने लगती थीं। दुनिया को और खुद को कम गम्भीरता से लेने लगी थी।इतनी -इतनी औरतों की गुस्से भरी कहानियों के बीच मेरा आक्रोश कहीं बिला जाता था"[8]

मारियान एक विदेशी पात्रा हैं जो रॉ नामक संस्था में काम करती है। मारियान अपने पति से पीड़ित एवं शोषित होती है। लेकिन अन्त में वह अपने पति से अलग होकर अपने आपको "औपन्यासिक" क्षेत्रों में अपनी एक अलग पहचान बनाने में सक्षम होती है।

नर्मदा दूसरों के घरों में काम करने वाली एक अशिक्षित नारी पात्र है वह अपनी सगी बहन और जीजा के कुटनीति का शिकार बनती है और असीमा की सहायता से वह आत्मनिर्भर बनती है। नर्मदा स्वयं काम करके अनाथ बच्चों को संभालती है। और नारी कल्याण को लक्ष्य करके नारी को आत्मनिर्भर बनाने में अपना समय व्यतीत करती है।

उपन्यास की नारी पात्र असीमा अलग चरित्र की है। वह कभी भी किसी पुरुष से पीड़ित व शोषित नही होती है। वह पुरुषों से नफरत करती है। वह स्वयं कहती है-" मुझे मर्दों से नफरत है। सब एक से एक बढकर हरामी होते है। सबसे बड़ा हरामी था मेरा बाप"[9] उसके पिता का माँ के प्रति जो व्यवहार था उसकी वजह से वह पुरूषों से नफरत करने लगी। नमिता का पति जब असीमा के सामने नमिता को पीटने लगता है तो वह अपने कराटे प्रशिक्षण का प्रयोग कर उसे पीटती है और वह महसूस करती है कि हरामी न0 1 को पीटकर जो आनन्द मिला था वह अपनी जगह था। उससे बड़ा सुख इस अहसास का था कि मैं किसी भी मर्द को पीट सकती हूँ। यही नहीं मेरे हाथ ऐसा कारगर नुस्खा लग गया था जिसे मैं अपनी साथिन औरतों के साथ बाँट सकती थी।"[10]

मृदुला गर्ग कृत कठगुलाब उपन्यास में निहित नारी-मुक्ति की चेतना का स्वरूप देखने को मिलता है। पुरूष के द्वारा नारी का शोषण तथा नारी द्वारा उस शोषण का मुकाबला कर अपने आत्मसम्मान तथा स्वयं को सिद्ध करने के लिए किये गये नारी के प्रयासों को मृदुला गर्ग द्वारा उपन्यास में रेखांकित किया गया है। नारी पात्रों के माध्यम से समकालीन नारियों को अपनी ऊर्जा का बोध कराना उनका मूल उद्देश्य रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता (भूमिका भाग से), हिन्दी पोकेट बुक, नई दिल्ली, 2008

2.रेखा कास्तकार, स्त्री चिन्तन की चुनौतियों, पृ0 सं0 25, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

3. मृणाल पाण्डेय,स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति, पृ0 14, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

4. दर्शन पाण्डेय, नारी अस्मिता की परख, संजय प्रकाशन,नई दिल्ली, 2004

5. डॉ0 तारा अग्रवाल, मृदुला गर्ग का कथा साहित्य,पृ0सं0 30

6. मृदुला गर्ग, चर्चित कहानियाँ- भूमिका से

7. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ स0 24 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2001

8. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ स0 54 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2001

9. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ स0 155 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2001

10. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ स0 167 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2001